कलीसिया। अध्याय 16

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के द्वारा उसके मार्गदर्शन के लिए, उसकी उपस्थिति के लिए, और उसकी आवाज़ सुनने के लिए, ***प्रार्थना*** करें। कलीसिया का निर्माण करने के विषय में दी जाने वाली इस शिक्षा और अपने समूह को परमेश्वर को समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट)	*[शान्त समय]* **इफिसियों 2 - 5**

दिए गए बाइबल अनुच्छेद (इफिसियों 2 - 5) में से अपने शान्त समय में से आपने जो कुछ सीखा है, उसे ***एक-एक*** करके एक-दूसरे के साथ ***बाँटें*** *(**या** अपने नोट्स में से **पढ़ें**)*।
जो व्यक्ति अपनी बातों को बाँट रहा है, उसे ध्यान से सुनें, उसकी बातों को गम्भीरता से लें और उसे स्वीकार करें। जिन बातों को वह बाँट रहा है उस पर चर्चा न करें। उन बातों को लिख लें।

3	**याद करना** (5 मिनट)	*[मसीही विवाह की तैयारी]* **(4) सभोपदेशक 8:5ब-6अ**

दो-दो करके ***समीक्षा*** करें।
(4) उचित समय : सपोपदेशक 8:5ब-6अ - बुद्धिमान का मन समय और न्याय का भेद जानता है। क्योंकि हर एक विषय का समय और नियम होता है।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* **यूहन्ना 6:1-71**

प्रस्तावित करें। **यूहन्ना 6:1-71** अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच चरण की विधि का प्रयोग करें। यूहन्ना 6 यीशु द्वारा पाँच हज़ार लोगों को खाना खिलाये जाने के पश्चात गलील में उसके तिरस्कार का वर्णन करता है।

कदम 1 .पढ़ें. **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें, आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 6:1-71 तक पढ़ें।
आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें। .

चरण 2 - **अवलोकन**

विचार करें। इस गद्यांश में कौन सा सत्य आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस गद्यांश में कौन सा सत्य आपके हृदय और मन को छूता है?
लिख लें। उन एक या दो सत्यों को खोजें जिन्हें आप समझ चुके हैं। उनके बारे में सोचें और अपने विचारों को अपनी नोटबुक में लिखें।
बाँटें। (समूह के सदस्यों के सोचने और लिखने के दो मिनट बाद, एक-एक करके उन विचारों को एक दूसरे के साथ बाँटे)।
आइये हम उन बातों को जो हमने खोजी हैं, एक दूसरे के साथ बाँटें।
(स्मरण रखें, प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य विभिन्न बातों को बाँटेंगे)।

6:5-13

खोज 1 **: विश्वास का अभ्यास करने की आवश्यकता।**

यीशु और उसके चेले एक एकान्त स्थान पर थे, परन्तु लोगों की एक बड़ी भीड़ उनके पीछे थी। वहाँ पर पाँच हज़ार पुरूष थे और उनके अलावा बहुत सी महिलाएँ और बच्चे भी थे! तब यीशु ने अपने चेलों में से एक चेले, फिलिप्पुस, को परखने के लिए यह कहा, "हम इनके भोजन के लिए कहाँ से रोटी मोल लाए?" तब फिलिप्पुस ने उत्तर दिया, "महीने की मज़दूरी (दौ सौ दीनार) की रोटी उनके लिए पूरी भी न होगी कि उनमें से हर एक को थोड़ी-थोड़ी मिल जाएँ!" *फिलिप्पुस ने यीशु के कार्य पर विश्वास करने के बजाए मात्र अनुमान ही लगाया!* यीशु ने फिलिप्पुस को परखा। यीशु ने फिलिप्पुस को यह दर्शाने का अवसर दिया कि क्या वह भूखे लोगों की भीड़ के लिए सहानुभुति रखता है और क्या उसने यीशु के आश्चर्यकर्मों को "चिन्हों" के रूप में लेना सीखा है कि नहीं। चिन्हों के रूप में आश्चर्यकर्म, यीशु की महिमा, उसकी सामर्थ्य और प्रताप, लोगों की हर ज़रूरत को पूरा करने की उसकी इच्छा को दर्शाते हैं। हालाँकि, फिलिप्पुस ने अनुमान लगाया और यह भूल गया कि यीशु की सामर्थ्य हर संभावित अनुमान से परे है! फिलिप्पुस के साथ ऐसा आश्चर्यकर्म पहले नहीं हुआ था जैसे कि यीशु ने काना के विवाह में प्रचुर मात्रा में दाखरस की आपूर्ति करने की अपनी सामर्थ्य को दिखाया था, वैसे ही वह यहाँ रोटी की पूर्ती करने में भी सक्षम है।

यीशु के एक और चेले, अन्द्रियास ने कहा, "यहाँ एक लड़का है जिसके पास जौ की पाँच रोटी और दो छोटी मछलियाँ हैं, परन्तु इतने लोगों के लिए वे क्या हैं?" अन्द्रियास ने लोगों की भीड़ को देखा और यीशु जो कुछ भी कर सकता था उस पर विश्वास किये बिना सिर्फ अनुमान लगाया! यीशु मसीह के सभी चेलों ने इस परिस्थिति को देखा और अनुमान लगाने शुरू कर दिए। वे सभी इस समस्या के लिए अनुमान लगाने और संदेह करने लग गए कि क्या इस समस्या का कोई समाधान हो सकता है कि नहीं! यीशु के पिछले आश्चर्यकर्मों के विषय में किसी ने भी विचार नहीं किया। किसी ने भी इस बात पर विश्वास नहीं किया कि यीशु क्या कर सकता था!

मेरे लिए सबसे बड़ी सच्चाई यह है कि यीशु संसार पर निर्भर नहीं है, जिसे उसने स्वयं बनाया। अगर उसने समस्त संसार को बनाया, तो वह दाखमधु (यूहन्ना 2) और रोटी और मछली (यूहन्ना 6) या कोई और वस्तु भी बना सकता है। मेरे लिए यह सीखना ज़रूरी है कि मुझे अपने जीवन को अपनी सभी समस्याओं के साथ नहीं, बल्कि इसे यीशु मसीह में उसकी सभी क्षमताओं के साथ देखना है (तुलना करें - मत्ती 6:25-27)! मुझे यीशु मसीह की ओर देखना सीखना चाहिए, जिसमें सभी समस्याओं को हल करने की क्षमता है। मुझे यीशु मसीह और उसके वचनों पर विश्वास करना सीखना चाहिए!

खोज 2 -ईश्वरीय इच्छा और मानव ज़िम्मेदारी के बीच सम्बन्ध।

(1) परमेश्वर पिता यीशु को अद्भुत रीति से लोग देता है।

यूहन्ना 6:37 में, यीशु कहता है, "जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, और जो कोई मेरे पास आएगा, उसे मैं कभी न निकालूँगा"। परमेश्वर पिता और परमेश्वर के पुत्र के बीच सम्पूर्ण मेल और सहयोग है। वे सभी लोग जो परमेश्वर पिता देता है, परमेश्वर का पुत्र उन सभी का स्वागत करता है। इस आयत में, यीशु ने परमेश्वर की स्वेच्छा द्वारा कुछ लोगों को यीशु को देने की बात पर बल दिया। इस आयत में, यीशु ने परमेश्वर की इच्छा पर ज़ोर दिया (तुलना करें - यूहन्ना 17:2,6; रोमियों 8:29-30; इफिसियों 1:4)।

हालाँकि, यूहन्ना 6:36 में, यीशु कहता है, "तुमने मुझे देख भी लिया है तौभी विश्वास नहीं करते!" इस आयत में, यीशु मनुष्य के उत्तरदायित्व पर ज़ोर देता है जो उसे परमेश्वर का वचन सुनते समय निभानी चाहिए। बहुत से लोगों ने, जिन्होंने उस दिन यीशु की बात सुनी, सुसमाचार सुना और यीशु के आश्चर्यकर्मों को भी देखा, और फिर भी उन्होंने विश्वास करने से इन्कार कर दिया! यीशु इन अविश्वासियों पर स्पष्टरूप से उन लोगों पर दोष डालता है जो अपने विकल्पों और कार्यों के लिए पूरी तरह ज़िम्मेदार हैं। इस आयत में, यीशु ने मनुष्य के उत्तरदायित्व पर ज़ोर दिया (तुलना करें - रोमियों 2:5-6)!

(2) परमेश्वर पिता लोगों को यीशु के पास प्रबल रूप से खींचता है।

यूहन्ना 6:44 में, यीशु कहता है, "कोई मेरे पास नहीं आ सकता जब तक पिता, जिसने मुझे भेजा है उसे खींच न ले"। इस आयत में, यीशु ने परमेश्वर के ईश्वरीय पूर्वाग्रह पर बल दिया क्योंकि यह इतिहास में किया जाता है। "खींचने" का अर्थ "ज्ञान और नैतिक प्रभाव देने" से कहीं अधिक है। पिता न केवल लोगों को संकेत करते और सलाह देता है, लेकिन वह उन्हें यीशु मसीह के पास प्रबल रूप से खींचता है!

यूहन्ना 12:32 में इसी शब्द "खींचने" का प्रयोग किया गया है, जहाँ उसके उत्थान के बाद (यानी, उसका क्रूस पर चढ़ाना, जी उठना, स्वर्ग पर चढ़ना और सिंहासन पर विराजमान होना), यीशु ने संसारभर के लोगों को प्रबल रूप से अपनी ओर खींचा! यूहन्ना 18:10 में इसी शब्द "खींचने" का प्रयोग किया गया है, जहाँ पतरस की तलवार वास्तव में उसकी म्यान से बाहर खींची जाती है। यूहन्ना 21:6,11 में भी, इसी शब्द प्रयोग किया जाता है, जहाँ बड़ी मछलियों से भरा जाल वास्तव में खींचा या निकाला जाता है! प्रेरितों 16:19 में इसी शब्द "खींचने" का प्रयोग किया जाता है, जहाँ पौलुस और सीलास को चौक में खींच लिया जाता है और प्रेरितों 21:30 में, जहाँ पौलुस को मंदिर से बाहर खींच लिया जाता है। याकूब 2:6 में इसी शब्द "खींचने" का प्रयोग किया जाता है, जहाँ धनी लोग कंगालों को कचहरियों में खींचते हैं। यह स्पष्ट है कि यीशु अनोखे तरीके से बात कर रहा है जिसमें परमेश्वर पिता लोगों को यीशु मसीह के क़रीब खींच रहा है।

हालाँकि, जब परमेश्वर लोगों को खींचता है, तो वह उनके साथ ज़िम्मेदार प्राणियों के रूप में व्यवहार करता है। वह उनके दिमाग, इच्छा, हृदय, हाँ उनके पूरे मानव व्यक्तित्व को शक्तिशाली ढंग से प्रभावित करता है ताकि वे अपने अधिकार में कार्य करना शुरू कर सकें। परमेश्वर पिता इतने शक्तिशाली तरीके से लोगों को अपनी ओर खींचता है कि ये लोग जीवित विश्वास से उसे स्वीकार करते हैं। लेकिन परमेश्वर की इच्छा कभी मानव ज़िम्मेदारी को अलग नहीं करती है! फिर भी, पहल और सामर्थ्य दोनों की शुरुआत हमेशा परमेश्वर की ओर से ही होती है! परमेश्वर की यह चित्रकारी सामर्थ्य सच्ची, मज़बूत और बहुत प्रभावी है, क्योंकि परमेश्वर स्वयं इसे नियंत्रित कर रहा है!

कदम 3. प्रश्न. व्याख्या

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये यूहन्ना 6:1-71में पायी जाने वाली सच्चाईयों का समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करे।)

चर्चा करें।(उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

यूहन्ना 6:45 में, यीशु कहता है, "वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे। जिस किसी ने पिता से सुना और सीखा है, वह मेरे पास आता है"। जिस तरह से लोगों को बचाया जा रहा है, उसके सम्बन्ध में, परमेश्वर की शिक्षा और मनुष्य का सुनना दोनों साथ-साथ नहीं रखा जा सकता है। बाइबल सिखाती है कि यह परमेश्वर ही है जो पहल करता है और शुरुआत से अंत तक नियंत्रण में है। लोगों को यीशु के पास आने से पहले परमेश्वर पिता की ओर खिंचे चले जाना चाहिए। परमेश्वर से सीखने और सुनने से पहले परमेश्वर पिता को लोगों को सिखाना चाहिए। कुछ लोगों को खींचने के

लिए परमेश्वर की इच्छा में इन लोगों की सुनने और सीखने की ज़िम्मेदारी शामिल है। नकारात्मक बात यह है कि जब तक परमेश्वर पिता नहीं खींचता, कोई भी यीशु के पास नहीं आ सकता! जब तक पिता सिखाता नहीं है, कोई भी सुन और सीख नहीं सकता। सकारात्मक बात यह है कि जिसे भी पिता खींचता है, वह निश्चित रूप से यीशु के पास आता है। जो भी सुनता है और सीखता है वह निश्चित रूप से बचाया जाएगा! परमेश्वर की करुणा हमेशा विजयी होती है। यह वही करता है जो इसे करना है। *परमेश्वर का अनुग्रह अनूठा है!*

6:26-29

प्रश्न 1 - यीशु का इस बात से क्या अर्थ है जब वह कहता है कि हमें उस भोजन के लिए परिश्रम नहीं करना चाहिए जो नाशवान है?

ध्यान दें। यह एक कहावत है जिसका अर्थ छिपा हुआ है (इब्रानी में : mashal, एक तुलना)। सामरी महिला की तरह ही *जीवन के जल* के विषय में की गयी बात उनकी समझ में नहीं आई, इसलिए यहूदी लोग अब *अनन्त जीवन के लिए*

भोजन के विषय में उसकी इस बात को समझ नहीं पाए। दोनों ने ही इन गवाहियों को एक शाब्दिक अर्थ दिया। *खाना जो नाशवान है,* वह सामान्य भोजन होता है, जो हृदय में प्रवेश नहीं करता है और इसलिए इसका कोई स्थायी मूल्य नहीं होता है। *जो भोजन सदैव ठहरता है,* वह यीशु मसीह स्वयं है, जो स्वयं पापों के लिए प्रायश्चित्त का बलिदान देता है। यह भोजन अनन्त जीवन पैदा करता है और इसे बनाए रखता है! अध्याय 5 में वर्णित सभी गवाहों के माध्यम से परमेश्वर पिता ने प्रमाणित किया है कि यीशु ही मसीह है, परमेश्वर का पुत्र है। इन सभी गवाहों के माध्यम से, परमेश्वर पिता ने "यीशु मसीह पर अपनी मुहर लगाई है" (यूहन्ना 6:27)।

परमेश्वर का "कार्य", यीशु मसीह में विश्वास करना है (यूहन्ना 6:29)! *विश्वास का काम* यह नहीं है कि कुछ अच्छा काम या धार्मिक कर्तव्य करके लोगों को बचाया जाए। कोई भी अनन्त जीवन हासिल नहीं कर सकता है! "विश्वास द्वारा किये गए काम" का अर्थ है कि विश्वासी *विश्वास द्वारा* परमेश्वर का दान *प्राप्त करता है।* उद्धार परमेश्वर की करुणा द्वारा दिया जाता है और मनुष्य के विश्वास से प्राप्त होता है (इफिसियों 2:8-9)। इसलिए, यीशु ने यहूदियों से आग्रह किया कि वह न सिर्फ सांसारिक चीज़ों के लिए कार्य करें, लेकिन उससे अनन्त जीवन प्राप्त करने का प्रयास करें।

6:39-40

प्रश्न 2 **- मसीहियों की दृढ़ता के बारे में बाइबल क्या सिखाती है।**

ध्यान दें।

(1) सच्चे मसीही अन्त तक दृढ़ बने रहेंगे।

यूहन्ना 6:39-40 में यीशु कहता है, परमेश्वर पिता की इच्छा यह है कि यीशु उस में से कुछ भी नहीं खोएगा, जो परमेश्वर पिता ने उसे दिया है, परन्तु उनके मृतक देहों को अंतिम दिन में मृतकों में से फिर जिला उठाएगा। हर कोई जो पुत्र पर विश्वास करता है उसके पास अनन्त जीवन है। इस प्रकार सच्चे विश्वासी अन्त तक दृढ़ बने रहेंगे! "अन्त का समय" दूसरे आगमन और अन्तिम न्याय के दिन को संदर्भित करता है।

(2) दृढ़ता मनुष्य के उत्तरदायित्व को अलग नहीं करती।

मसीहियों की दृढ़ता से सम्बन्धित सत्य यूहन्ना 6:39 में ईश्वरीय इच्छा के दृष्टिकोण से और मनुष्य के उत्तरदायित्व के दृष्टिकोण से 40 पद में देखा गया है। परमेश्वर के दृष्टिकोण से सभी मसीही सामूहिक रूप से यीशु मसीह को दिए जाते हैं (तुलना करें - यूहन्ना 10:29) और मसीह उन्हें अन्त तक दृढ़ बनाये रखता है! वह अपने कार्य में असफल नहीं हो सकता और न ही कभी होगा! लेकिन मनुष्य के दृष्टिकोण से प्रत्येक मसीह जन के पास विश्वास बनाये रखने की स्वयं के व्यक्तिगत उत्तरदायित्व होते है (यूहन्ना 3:16 देखें जहाँ क्रिया निरन्तर वर्तमान काल में है)।

(3) सम्पूर्ण बाइबल में विश्वासियों की दृढ़ता के विषय में सिखाया गया है।

यूहन्ना 10:28 कहता है कि मसीहियों

- ने अनन्त (कभी खत्म न होने वाला) जीवन प्राप्त किया है
- का कभी नाश नहीं होगा
- को कोई भी उसके हाथ से छीन नहीं सकता

रोमियों 8:28-33 कहता है कि परमेश्वर

- ने अनन्तकाल से ही लोगों को चुना (foreknew) और उन्हें ठहराया
- के समय में उन्हें (सुसमाचार के प्रचार के माध्यम से) बुलाया और उन्हें धर्मी ठहराया (विश्वास के माध्यम से)
- भविष्य में उनकी महिमा करेगा

रोमियों 11:29 कहता है कि परमेश्वर के वरदान और बुलाहट अपरिवर्तनीय हैं!

फिलिप्पियों 1:6 कहता है कि परमेश्वर, जिसने मसीहियों में एक अच्छा काम आरम्भ किया है, वही इसे मसीह के दूसरे आगमन तक पूरा करेगा!

2 तीमुथियुस 2:19 कहता है कि परमेश्वर की नींव दृढ़ है, जिस पर इस लेख की मुहर है, "प्रभु अपनों को पहिचानता है"।

1 पतरस 1:4-5 कहता है कि परमेश्वर ने हमें एक अविनाशी और निर्मल, और कभी न खत्म होने वाली मीरास दी है जो हमारे लिये स्वर्ग में रखी है, और अन्त के समय तक मसीही लोग परमेश्वर की सामर्थ्य द्वारा सुरक्षित किए गए हैं।

इस प्रकार, बाइबल यह वायदा करती है कि अनन्तकाल से परमेश्वर की योजना को बदला नहीं जा सकता है, परमेश्वर

के समय में उसकी बुलाहट का खण्डन नहीं किया जा सकता, भविष्य में मसीहियों की विरासत को अशुद्ध नहीं किया जा सकता, परमेश्वर की नींव हिल नहीं सकती है, परमेश्वर की मुहर टूट नहीं सकती है और परमेश्वर में मसीहियों का जीवन कभी भी नष्ट नहीं हो सकता। इसके अलावा, सच्चाई के बचाव में मसीहियों की दृढ़ता निश्चित रूप से "अनन्त जीवन" शब्द में निहित है।

6:50-58

प्रश्न 3 - "यीशु की देह खाने" और "यीशु के लहू को पीने" का क्या अर्थ है?

टिप्पणियाँ। यूहन्ना 6:51,54 में यीशु फिर से छिपे हुए अर्थ (एक "mashal", एक तुलना) की बात को कहता है। "मैं जीवन की रोटी हूँ जो स्वर्ग से उतरी है। यदि कोई इस रोटी में से (Greek: esthió, efagon) (उपजाऊ, सिद्धांतवादी, सक्रिय) खाये, तो वह सदा जीवित रहेगा। यह रोटी मेरी देह है, जिसे मैं जगत के जीवन के लिए दूँगा। ... जो मेरी देह खाता है (Greek: trógó) (वर्तमान काल) और मेरा लहू पीता है (Greek: pinó) (वर्तमान काल), उसके पास अनन्त जीवन है, और मैं अन्त के समय फिर उसे जिला उठाऊँगा।"

(1) इन शब्दों का शाब्दिक अर्थ नहीं निकाला जा सकता।

बहुत से लोगों ने यीशु के इन शब्दों को कम या अधिक शाब्दिक अर्थ के रूप में लिया और वे यह समझने में नाकाम रहे हैं कि उसके कहने का क्या तात्पर्य था। यहूदियों ने निश्चित रूप से यीशु की बातों का अर्थ शाब्दिक रूप से लिया, जैसे कि उनका इरादा था कि किसी भी तरह से या अन्य लोगों को अपने शारीरिक शरीर को सम्मिलित करना चाहिए। यहूदियों के लिए लहू का पीना एक घृणित बात थी। और व्यवस्था बताती है कि परमेश्वर लहू खाने वालो से विमुख रहता है (लैव्यव्यवस्था 17:10)। यीशु मसीह ने निश्चित रूप से मनुष्य का माँस खाने की पैरवी नहीं की।

(2) मांस और लहू यीशु मसीह की देह और आत्मा का प्रतीक है।

यदि यहूदियों ने बाइबल का अध्ययन किया होता, तो वे यीशु की बात को समझ पाते कि वह किस संदर्भ में बात कर रहा था। लैव्यव्यवस्था 17:11 में बाइबल बताती है, "क्योंकि शरीर का प्राण लहू में रहता है; और उसको मैंने तुम लोगों को वेदी पर चढ़ाने के लिए दिया है, कि तुम्हारे प्राणों के लिये प्रायश्चित्त किया जाए; क्योंकि प्राण के कारण लहू ही से प्रायश्चित्त होता है।"

लहू को जीवन के आधार के रूप में देखा गया और जो आत्मा को दर्शाता था। आत्मा के अलावा, लहू का कोई आंतरिक मूल्य नहीं है! इब्रानियों 9:22 में लिखा है, "बिना लहू बहाए, क्षमा नहीं मिलती"। जिस प्रकार, पुराने नियम में, एक भेड़ के बच्चे को पापियों के पाप के प्रायश्चित के बलिदान के रूप में अपने जीवन को बलिदान करना पड़ता था, उसी प्रकार यीशु मसीह को प्रायश्चित के बलिदान के रूप में अपने लहू को बहाकर प्राण देने पड़े। यीशु के लहू का बहना, अर्थात्, उसकी आत्मा या जीवन का बहना, हमारे पापों का दण्ड था और वही हमारे पापों के बदले परमेश्वर के पवित्र क्रोध को संतुष्ट कर सकता था। मानव इतिहास में यह सबसे महत्वपूर्ण घटना थी!

(3) खाना और पीना ग्रहण करने और उसको पचाने का प्रतीक है।

जैसे भोजन और पेय पदार्थों की पेशकश की जाती है और उसे स्वीकार किया जाता है, वैसे ही मसीह का बलिदान विश्वासियों को दिया जाता है और उनके द्वारा स्वीकार किया जाता है। जैसे शरीर भोजन और पानी को पचाता है, वैसे ही आत्मा मसीह के प्रायश्चित्त के बलिदान को पचाती है। यीशु की देह और लहू क्रूस पर यीशु के प्रायश्चित्त के बलिदान के प्रतीक हैं। खाना और पीना आपके गहरे अस्तित्व में मसीह को अपने पापों के लिए प्रायश्चित्त के रूप में स्वीकार करने के प्रतीक हैं। यीशु की बातों का अर्थ कभी भी शाब्दिक अर्थ के रूप में नहीं था, बल्कि प्रतीकात्मक अर्थ के रूप में था। उसके कहने का मतलब था, "जो व्यक्ति मुझे अपने हृदय और जीवन में स्वीकार करता है, उसके पापों के प्रायश्चित्त के एकमात्र बलिदान के रूप में अनन्त जीवन है, यानी वह बचाया जाएगा"।

यूहन्ना 6:66-69 में, "एक चेले के रूप यीशु मसीह का अनुसरण" करने का अर्थ, यीशु पर पवित्र परमेश्चर के रूप में (जीवित परमेश्वर का पुत्र) विश्वास करना है। इसी प्रकार, "उसकी देह को खाना और उसके लहू को पीने का" अर्थ यीशु मसीह पर अपने पापों के प्रायश्चित के एकमात्र बलिदान के रूप विश्वास करना है। इस प्रकार मसीही लोग स्वयं को आज से 2000 वर्ष पहले मसीह ने उनके लिए जो कुछ किया, उसके द्वारा पहिचानते है। विश्वासी का आत्मिक जीवन क्रूस पर यीशु मसीह के प्रायश्चित के बलिदान के द्वारा फलता और निरन्तर बना रहता है।

(4) इस संदर्भ में शिक्षा आत्मिक है शाब्दिक नहीं।

समान्तर रूप से[1] पद 35 से यह पता चलता है कि यीशु यह कहना चाहता है कि "यीशु मसीह के पास आने" का अर्थ है "यीशु मसीह पर विश्वास करना"! हम आसानी से देख सकते है कि यीशु के वचन पद 40 के साथ पद 54

की तुलना करके प्रतिकात्मक रूप से समझा जा सकता है। जबकि पद 54 में "यीशु का मांस खाने और लहू पीने" की बात की गई है (प्रतिकात्मक भाषा) और पद 40 में "यीशु की ओर देखने (Greek: theoreó) और यीशु मसीह पर विश्वास करने की बात की गई है" (सरल भाषा), दोनों ही बातों के परिणाम बिल्कुल समान हैं : अर्थात् "अनन्त जीवन का होना और अन्त के समय में उठाया जाना"। पद 56 में भी परिणाम का देखें : "जो मेरा मांस खाता और मेरा लहू (प्रतिकात्मक भाषा) पीता है, वह मुझ में स्थिर बना रहता है, और मैं उस में (शाब्दिक भाषा)"! ये सभी आत्मिक अवधारणाएँ है और यह साबित करती है कि यह अनुच्छेद सिर्फ शाब्दिक अवधारणाओं के विषय में नहीं है, बल्कि आत्मिक अवधारणाओं को बताता है।

यूहन्ना 6:48-59 परमेश्वर के भोज के विषय में बात नहीं करता, परन्तु यह यीशु मसीह में पहली बार विश्वास करने के विषय में औपचारिक भाषा में बात करता है! 50 से 53 पदों में "खाने" (Greek: esthió, efagon) और "पीने" (Greek: pinó) शब्द के लिए एक ऐसे काल का प्रयोग किया जाता है जो कि किसी के जीवन में विश्वास से मसीह को प्राप्त करने के लिए एक समय को दर्शाता है। पद 54 से 56 में "खिलाने" (Greek: trógó) और "पीने" "Greek: pinó) में वर्तमान काल है जो मसीह में विश्वास के साथ स्थायी सम्बन्ध बनाने और उसी में बने रहने को दर्शाता है (यूहन्ना 6:40)। यीशु स्वयं बताता है कि पद 40, 47 और 54 में वह क्या कहना चाहता है, "जो कोई पुत्र पर विश्वास करेगा वह अनन्त जीवन पाएगा, और मैं उसको अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँगा"। यीशु यह नहीं सिखाता कि चमत्कारी तरीक़े से रोटी और दाख मसीह की देह और लहू बन जाता है।[2] इस स्थान पर, यीशु अविश्वासियों से उस पर विश्वास करने के विषय में बात कर रहा था (यूहन्ना 6:41-42) और विश्वासियों से प्रभु-भोज के विषय में बात नहीं कर रहा था।

यीशु मसीह की शारीरिक देह प्रभु-भोज या पृथ्वी पर कहीं और रहस्यमय तरीक़े से मौज़ूद नहीं है। अपने महिमान्वित शारीरिक देह में, यीशु मसीह स्वर्ग पर चढ़ गया और परमेश्वर पिता के दाहिनी ओर बैठा है (प्रेरितों के काम 1:9-11)! इसलिए पृथ्वी पर कोई भी यीशु मसीह के महिमान्वित शारीरिक देह जो स्वर्ग में है उसके साथ कुछ भी नहीं कर सकता है।

अन्त में पद 63 में यीशु स्पष्टरूप से यह सिखाता है कि वह शाब्दिक चीज़ों विषय में नहीं, बल्कि आत्मिक चीज़ों के बारे में बात कर रहा है। "(पवित्र) आत्मा (यीशु मसीह का) जीवन देता है, (मनुष्य) मांस (देह) (यीशु मसीह का) महत्वपूर्ण नहीं है। जो बातें मैंने तुमसे कही हैं वे आत्मा है और वे जीवन है।" उसके शब्द मृतक नहीं है, लेकिन उनका गहरा आत्मिक महत्व है और वह आत्मिक जीवन लाता है। वह कहता है कि उसकी (ईश्वरीय) आत्मा पुनर्जीवन (नया जन्म) लाती है (यूहन्ना 1:13; यूहन्ना 3:3,5) और उसका "मांस" (शारीरिक शरीर) स्वयं में कुछ अच्छा नहीं कर सकता। वह यह कहना चाहता है कि लोगों को यह सोचना बन्द कर देना चाहिए कि वह उन्हें सचमुच "अपना मांस खाने" और "अपना लहू पीने" के लिए कह रहा है। यह उसकी (ईश्वरीय) आत्मा है जो उसकी मृत्यु के आधार पर और मरे हुए में से जी उठने के द्वारा अनन्त जीवन देता है।[3] वह यह कहना चाहता है कि उसकी बातों और वचनों को शाब्दिक रूप से नहीं परन्तु आत्मिक रूप से समझा जाना चाहिए। यह वह प्रतीक है जो आत्मिक वास्तविकताओं को दर्शाते हैं। जो इन सत्यों को ग्रहण करता है जो उसके शब्द और वचन है, वे निश्चित रूप से अनन्त जीवन प्राप्त करेगा।

चरण 4 - लागू करना **अनुप्रयोग**

विचार करें। इस परिस्थिति में कौन से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग है?

बाँटें और लिख लें। आइये हम एक दूसरे के साथ विचार विमर्श करें और यूहन्ना 6:1-71 में से संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

विचार करें। ऐसा कौन सा अनुप्रयोग है जिसे परमेश्वर आपसे चाहता है कि आप उसे अपने व्यक्तिगत जीवन में लागू करें?

लिख लें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी नोटबुक में लिख लें। अपने इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को दूसरों के साथ बाँटने में अपने आप को स्वतंत्र महसूस करें।

(स्मरण रखें कि हर समूह में लोग अलग-अलग सत्यों को लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग बताएँगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

[1]समान्तर शब्द भाषा का वह रूप है जिसमें एक ही चीज़ को समझाने के लिए दो अलग-अलग शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इस स्थान पर "यीशु के पास आने वाले शब्द" "यीशु में विश्वास करनेवाले" शब्दों के समान्तर है।

[2]चीज़ों को बदलने का सिद्धान्त जिसमें रोटी और दाख चत्मकारी रूप से मसीह की देह और लहू में परिवर्तित हो जाता है बाइबल की शिक्षा नहीं है!

यूहन्ना 6:1-71 में से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

6:5-9 – जब भी यीशु आपको कुछ कहता है तो तर्कसंगत तरीके से बहस करना और गणितज्ञ के समान गणना करना बंद करें। यीशु चाहता है कि हम विश्वास से उसके वचनों को स्वीकार करें।

6:15 – जब भी लोग आपको किसी बात के लिए विवश करें या अपनी इच्छा को आपके ऊपर डालें, तो उनसे दूर हो जाना ही भला है।

6:27 – अस्थायी और व्यर्थ की चीज़ों में अपना समय, ऊर्जा और पैसा ख़राब न करें। अपने आपको और जो कुछ भी आपके पास है उन सबको उसे दें जो हमेशा के लिए रहता है! केवल यीशु ही आपको ऐसी चीज़ें दे सकता है।

6:28-29 – परमेश्वर को जिन कार्यों की आवश्यकता है वह मनुष्य के (अच्छे या धार्मिक) काम नहीं है, बल्कि परमेश्वर के वचनों में, परमेश्वर के कामों में और परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह में विश्वास करने का अभ्यास है।

6:35 – यीशु मसीह में विश्वास करो तो आप आत्मिक रूप से भूखे या आत्मिक रूप से प्यासे कभी नहीं रहेंगे। यदि आप विश्वास करते रहेंगे तो आप सर्वदा जीवित रहेंगे और सर्वदा संतुष्ट रहेंगे।

6:37 – यीशु मसीह में विश्वास करो तो वह आपको कभी भी अकेला नहीं छोड़ेगा।

6:38 – आप पृथ्वी पर हैं, अपनी इच्छा पूरी करने के लिए नहीं, बल्कि परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए।

6:39 – यकीन मानिए कि यीशु मसीह आपको कभी भी भटकने नहीं देगा! (यूहन्ना 17:12)

6:40 – यकीन मानिए कि यीशु मसीह आपकी देह को अपने दूसरे आगमन पर पुनर्जीवित करेगा।

6:44,65 – यह समझने की कोशिश मत कीजिए और न ही इस तथ्य पर सवाल करें कि परमेश्वर पिता लोगों को यीशु मसीह की ओर खींचता है। बल्कि इसकी बजाय विश्वास, आश्चर्य और धन्यवाद के साथ इसे स्वीकार करें।

6:45 – परमेश्वर पिता की सुनें और उससे सीखें, क्योंकि इसी तरह परमेश्वर आपको यीशु मसीह की ओर खींचता है!

6:44,40 – बाइबल की सब बातों को शाब्दिक रूप में न लें। इसकी बजाय, बाइबल की सब बातों को उस प्रकार लें जिस तरह से परमेश्वर चाहता है कि आप इसे समझें। यहाँ तक कि बाइबल में प्रतीकात्मक या रूप रेखात्मक अभिव्यक्तियों को शाब्दिक वास्तविकताओं का भी संदर्भ मिलता है जो चिन्हों की शाब्दिकता के अर्थ से से कहीं परे हैं। उदाहरण के लिए, प्रतीकात्मक या रूप रेखात्मक अभिव्यक्ति "परमेश्वर का मेमना" (यूहन्ना 1:29) एक शाब्दिक भेड़ के बच्चे से कहीं अलग है और वह यीशु मसीह को संदर्भित करता है!

1. यूहन्ना 6:1-71 में से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं यह नहीं चाहता की मेरे आस-पास में पाई जाने वाली वस्तुएँ मेरी आँखों को यीशु से दूर ले जाएँ. मैं विश्वास करना सीखना चाहता हूँ। जिनका मैं सामना कर रहा हूँ उन सभी कठिनाइयों का समाधान खोजने की कोशिश करने के बजाय, तर्कसंगत रूप से बाधाओं और जोख़िमों की गणना कर रहा हूँ, मैं यीशु मसीह की बड़ाई, सामर्थ्य और महिमा में विश्वास करना चाहता हूँ। वह, जो पानी को दाख में बदल सकता है और रोटी को कई गुणा बढ़ा सकता है, वह मेरी सभी वास्तविक ज़रूरतों को भी पूरा कर सकता है।

मैं गहराई से विश्वास करना चाहता हूँ कि परमेश्वर मेरे जीवन के हर पहलू का प्रभु है। उसने मुझे यीशु मसीह के पास खींचा और यीशु मसीह को एक ईश्वरीय रूप में दिया। उसने मुझे सिखाया, मुझे बचाया और अब मेरे जीवन को ईश्वरीय रूप से नियंत्रित करता है। वह हमेशा पहल करता है और मुझे अपनी पहल का जवाब देने के लिए आदेश देता है। मैं स्वयं को ज़िम्मेदार बनाने के लिए समर्पित करना चाहता हूँ और हमेशा अपने जीवन में उसकी पहल के प्रति प्रतिक्रिया देता हूँ। मुझे यह जानकर बहुत ख़ुशी हुई कि परमेश्वर की कृपा अनूठी है और हमेशा विजयी होती है!

चरण 5 - प्रार्थना करें **प्रतिक्रिया**

आइये एक-एक करके उस एक सत्य के लिए जो परमेश्वर ने हमें यूहन्ना 6:1-71 में सिखाया है, प्रार्थना करें।

(इस बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है, प्रार्थना में उसके प्रति अपनी प्रतिक्रिया को दर्शाएँ। केवल एक या दो वाक्यों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह में लोग विभिन्न विषयों पर प्रार्थना करें।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[निवेदन]*
		दूसरों के लिए प्रार्थना करें

दो या तीन के समूह में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** आपस में मिलकर दूसरों के लिए और संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	*[निर्धारित कार्य]*
		दूसरे अध्याय के लिए कार्य

(***समूह का अगुवा।*** समूह के सदस्यों को यह कार्य घर के लिए लिखित रूप में दें या उन्हें इसे अपनी नोटबुक में लिखने दें)।

1. समर्पण। शिष्य बनाने और मसीह की कलीसिया का निर्माण करने के लिए प्रतिबद्ध रहें।
2. यूहन्ना 6 पर दूसरे व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ प्रचार, शिक्षा या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **इफिसियों 6 और फिलिप्पियों 1 - 2** के आधे अध्यायों के लिए चुना हुआ समय निर्धारित करें। सत्य विधि का उपयोग करें। इसके नोट्स बना लें।
4. याद करना। बाइबल की नई आयतों पर ध्यान लगाएँ और उन्हें याद करें **(5) (उचित प्राथमिकताएँ : मत्ती 6:33)**। प्रतिदिन पहले याद की गई पाँच बाइबल की आयतों की समीक्षा करें।
5. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी और व्यक्ति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर किस प्रकार कार्य करता है (भजन संहिता 5:3)
6. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

---

[3]उसकी (मानविय) आत्मा (वह स्वयं, पूरी तरह स्वेच्छा से) (यूहन्ना 10:18) ने उसके क्रूस पर चढ़ने और उसके लहू को बहने की इज़ाज़त दी जो विश्वासियों को अनन्त जीवन देता है।